Date – 27/08/2020

Dr. Sanehlata
Asst. Professor (Guest faculty)
Dept. of Philosophy
Women's College, Samastipur
Email Id. – Snehababli 1987 @ gmail.com
Cont. no. – 8409587640

Class – B.A. – II (Hons.)

Topic – Theory of Knowledge: Dharmakirti

Scanned with CamScanner

धर्मकीर्ति ने दिङ्नाग द्वारा दी गई परिभाषा को स्पष्ट करने की कोशिश की है। अपनी "प्रमाणवार्तिक" नामक पुस्तक में उन्होंने कहा कि "किसी संबंधी के धर्म से, धर्मी के विषय में जो ज्ञान परोक्ष रूप से उत्पन्न होता है, उसे अनुमान कहा जाता है।" इस परिभाषा के अंतर्गत निम्नलिखित पद पाए जाते हैं:—

(क) संबंधी का धर्म
(ख) धर्मी
(ग) परोक्ष रूप से उत्पन्न ज्ञान

'संबंधी' पद से ज्ञात होता है कि कम से-कम दो पद हैं, जिनमें संबंध होता है और वे एक दूसरे के संबंधी होते हैं। उन दो पदों में एक धर्म और दूसरा धर्मी कहलाता है। धर्मी वही होता है जो धर्मयुक्त है। धर्मी विशेष्य है और धर्म विशेषण। अतः संबंधी का धर्म - इस पद का तात्पर्य धर्मी के विशेषण से है। धर्मी अनुमान का विषय है, जिसके संबंध में ज्ञान प्राप्त किया जाता है। यह ज्ञान प्रत्यक्षगम्य नहीं होता है, बल्कि धर्मी के विशेषण अनित्य हेतु के प्रत्यक्ष ज्ञान के आधार पर धर्मी अनित्य साध्य के विषय में अप्रत्यक्ष रूप से ज्ञान होता है। यह ज्ञान अनुमान है। धर्मकीर्ति भी अनुमान को ही अनुमिति मानता है।

Scanned with CamScanner

धर्मकीर्ति द्वारा दी गई उक्त परिभाषा की व्याख्या करते हुए मनोरथनंदी ने 'प्रमाणवार्तिक' पर विवरण लिखते गई अपनी 'वृत्ति' नामक पुस्तक में कहा है कि "अन्वय-व्यतिरेक लिंग द्वारा उसके आश्रय में जो परोक्ष अर्थ की प्रतीति होती है, उसे अनुमान कहा जाता है जो त्रिरूपलिंग द्वारा उत्पन्न होता है।" यहाँ प्रमुख बातें हैं—

(क) अन्वय और व्यतिरेक लिंग अर्थात् भावात्मक और निषेधात्मक हेतु

(ख) परोक्ष अर्थ, जिसका आश्रय हेतु

(ग) त्रिरूपलिंग से उत्पन्न ज्ञान अर्थात् अनुमान

कहने का तात्पर्य है कि अनुमान की प्रक्रिया का मूल आधार त्रिरूप लिंग (हेतु) है। हेतु के तीन रूप जैसा कि दिङ्नाग ने बताया है, पक्षसत्व, सपक्षसत्व और विपक्षासत्व है। सपक्षसत्व और विपक्षासत्व क्रमशः अन्वय हेतु और व्यतिरेक हेतु के उदाहरण है। अन्वय हेतु वह है जो साध्य के साथ सदैव वर्तमान रहता है। व्यतिरेक हेतु वह है जो साध्य के अभाव में सदैव अनुपस्थित रहता है। इन दोनों हेतुओं से युक्त उदाहरणों (सपक्षसत्व और विपक्षासत्व) के प्रत्यक्ष ज्ञान के आधार पर ही इन हेतुओं पर निर्भर करने वाले अज्ञात या परोक्ष अर्थ अर्थात् साध्य का ज्ञान उत्पन्न होता है। परंतु इस ज्ञान के उत्पन्न होने के पहले किसी पक्ष में हेतु का भी प्रत्यक्ष ज्ञान होता है, अर्थात् पक्षसत्व के ज्ञान होने पर ही सपक्षसत्व और विपक्षासत्व की सहायता लेकर अज्ञात साध्य का ज्ञान प्राप्त किया जाता है। इसे एक उदाहरण द्वारा स्पष्ट किया जा सकता है।

जहां-जहां शीशम है, वहां-वहां शीशम के पेड़ है। जैसे- यह वन।

यह शीशम का पेड़ है।

अतः,

यह शीशम का पेड़ है।

जहां-जहां शीशम है, वहां-वहां शीशम के पेड़ है। जैसे- यह वन।

Scanned with CamScanner

दोनों उदाहरण अन्वय हेतु से युक्त है। "शीशम का पेड़" अन्वय हेतु है और अज्ञात साध्य "यह (शीशम)" है, जिसका ज्ञान पक्षसत्व (यह शीशम का पेड़ है) और सपक्षसत्व (यह वन जहां शीशम के पेड़ के साथ शीशम है) द्वारा होता है।

जहां-जहां शीशम का पेड़ है नहीं है, वहां-वहां शीशम नहीं है। जैसे- आम का बगीचा। यह शीशम का पेड़ है।

अथवा,

यह शीशम का पेड़ है।

जहां-जहां शीशम का पेड़ नहीं है, वहां-वहां शीशम नहीं है। जैसे- आम का बगीचा।

ये दोनों उदाहरण व्यतिरेक हेतु से युक्त है। "शीशम का पेड़ नहीं" व्यतिरेक हेतु है, और अज्ञात साध्य "यह (शीशम) है" जिसका ज्ञान विपक्षासत्व (आम का बगीचा) द्वारा होता है।

Scanned with CamScanner